INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 6 | JULY – 2024

सतना जिले के प्राकृतिक पर्यटन स्थल का अध्ययन

वीरेन्द्र कुमार वर्मा
शोधार्थी भूगोल
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. आर. के. शर्मा
प्राचार्य
इन्द्रा स्मृति महाविद्यालय, न्यू रामनगर, सतना (म.प्र.)

सारांश –

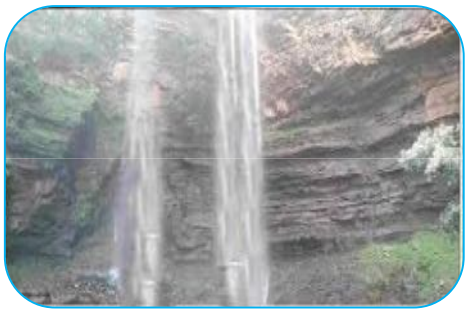

हमारे देश में पर्यटन की जहाँ एक ओर सामाजिक और आर्थिक लाभ का स्रोत है और राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय मेल–मिलाप को बढ़ावा देता है वहीं दूसरी ओर इससे सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों में शानदार कैरियर के अवसर भी उपलब्ध हैं। वर्तमान समय में पर्यटन अत्यन्त ही तीव्र गति से बढ़ता हुआ उद्यम व व्यवसाय बन गया है, यह मानवीय समाज में मनुष्यों के मनोरंजन, आकर्षण व आपसी सौहार्द्रपूर्ण वातावरण को निर्मित करने का एक सहज माध्यम बन गया है। सतना जिले की प्राकृतिक विविधता पर्वत, पठार, घाटी, मैदान, जलप्रपात, कन्दरायें एवं नदियाँ इत्यादि प्रमुख पर्यटन स्थलों के रूप में अपने आप को संजोये हुए राज्य में प्रमुख स्थान रखता है। जिले की भूमि पर्वती, पठारी, मैदानी एवं कन्दरायें आदि पर्यटकों के आकर्षण के प्राकृतिक भूभाग हैं।

मुख्य शब्द – पर्यटन, सामाजिक, आर्थिक एवं प्राकृतिक विविधता।

प्रस्तावना –

आज पर्यटन उद्योग के विकास के लिए अनेक चुनौतियाँ हैं। आवश्यकता इस बात की है कि पर्यटन के लिए उचित वातावरण तैयार करने की एवं प्रदेश तथा देश का सैलानियों के स्वर्ग के रूप में एक आकर्षक छवि प्रस्तुत करने की पर्यटन क्षेत्र में प्रादेशिक विविधताओं के अनुरूप सतत् शोध अन्वेषण की आवश्यकता है एवं जन सामान्य की सहभागिता हेतु पर्यटन विकासक्रम को बढ़ावा देने के लिए पोस्टर, बैनर, मॉडल, मॉडयूल्स, मानचित्र, आरेख, पर्यटन से सम्बन्धित नारे, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, कार्यशाला, कार्यक्रम आयोजन की आवश्यकता है। पर्यटन विभाग द्वारा प्रायोजित विदेशी पर्यटक सर्वेक्षण एवं प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर पर्यटन विकास के लिए सम्बर्द्धनात्मक उपायों में दो बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रथम उन क्षेत्रों की ओर प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है जो अभी तक उपेक्षित रहे हैं जहाँ पर्यटकों को आकर्षित करने की संभावनायें हैं। दूसरे परम्परागत पर्यटकों को प्रोत्साहन के साथ–साथ उन पर्यटकों को आकर्षित करने का प्रयास किया जाये जो साहसिक भ्रमण जैसे–पर्वतारोहण, ट्रेकिंग वाले भ्रमण आदि कई

कार्यक्रमों की अपेक्षा अभिरूचि के कुछ गिने चुने स्थानों पर आरामदायक भ्रमण की व्यवस्था अधिक उपयोगी होगा। सतना जिला भी इसका अपवाद नहीं है, जिले में विद्यमान पर्यटन राज्यों का सर्वाधिक महत्व है।

सतना जिला के सुप्रसिद्ध दर्शनीय एवं पर्यटन स्थल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व हेतु जाना जाता है। जिले में इतिहास से जुड़ी काफी संरचनाएँ, परिलक्षित होती है। यहाँ उपलब्ध धार्मिक, औद्योगिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, जैविक और पुरातात्विक महत्वपूर्ण वाले स्थान पर वर्ष भर पर्यटकों का आवागमन लगा रहता है। इतिहास एवं कला संस्कृति में रूचि लेने वाले व्यक्तियों के लिए यह काफी महती है। सतना जिला की पावन टोन्स नदी के तटीय भागों पर विद्यमान मैहर, चित्रकूट एवं बिरसिंहपुर मुख्य धार्मिक स्थल है। जिला में जलप्रपात, चित्रकूट, भरत मिलाप मन्दिर, गुप्त गोदावरी, जानकी कुण्ड, हनुमानधारा और सती अनुसुइया आदि स्थानों का भ्रमण किया जाता है। यहाँ का जल प्रपात, नदियाँ, वन, मन्दिर और धार्मिक स्थान अपनी गरिमा और गौरव के लिए प्रसिद्ध है तथा पर्यटन आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

सतना जिला अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सौन्दर्यपूर्ण पर्यटन स्थल हेतु विख्यात है। सतना जिले में प्रवाहित होने वाली सतना नदी है। वैसे तो यहाँ की पावन नदी टोंस प्राकृतिक रूप से इस संवारने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। इस जिले का महत्व महाभारत काल से ही रहा है और इसके आसपास जैन बौद्ध एवं हिन्दू धार्मिक स्थल इस भू–भाग के ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व का वर्णन करते हैं। सतना जिला पूर्णरूप से बघेलखण्ड के परिक्षेत्र में आता है। यह भू–भाग अत्यंत रमणीय, शान्त पर्यावरण/वातावरण मन को प्रफुल्लित करने वाला जिला है। जहाँ प्रेम, सद्भाव, व्यवहार आपसी भाईचारा सबसे पहले आता है। मध्यप्रदेश का सतना सर्वाधिक व्यापक सीमेन्ट फैक्ट्री एवं सीमेंट उत्पादन हेतु सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। सतना जिला मध्यप्रदेश के रीवा जिला के एक सम्भाग का एक भाग है, इसका प्रशासनिक मुख्यालय सतना शहर में ही विद्यमान है।

विश्लेषण –

सतना जिला प्रकृति की गोद में बसा हुआ है। इस कारण सतना जिला प्राकृतिक सुन्दरता से भरा पड़ा है। सतना जिला अनेक ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक दर्शनीय स्थानों से सम्पन्नशील है। यहाँ अनेक धर्म सम्प्रदायों की उत्पत्ति हुई है और उनकी प्रचार स्थली है। पर्यटन की दृष्टिकोण से इस भू–भाग में प्राकृतिक विभिन्नता पर्वतीय श्रृंखला, मैदानी भाग, पठारें, जल प्रपात, नदियाँ, कन्दराएँ, झील, जलाशय और जलधाराएँ हैं। जिले की जलप्रपातों का दृश्य अत्यंत ही मनोरम है। जिले की धरातल पर्वतीय, घाटी, पठारी कन्दरायें एवं मैदानी पर्यटकों के आकर्षण के प्राकृतिक भूदृश्य है। जिले की प्राकृतिक सुन्दरता पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। सतना जिले में प्रवाहित होने वाली नदियों का कलकलाती जलधाराएँ पर्यटकों के मन को मोह लेती है। यहाँ हरे–भरे जंगल, पेड़–पौधों व वनस्पतियों का सुन्दर नजारा देखने में काफी अच्छा लगता है। सतना जिले की प्राकृतिक स्वरूप से आकर्षित करने वालेस स्थानो की जानकारी निम्नानुसार है –

- **राजा बाबा झरना, सतना** – राजा बाबा मन्दिर एवं राजा बाबा झरना सतना शहर में विद्यमान एक प्राकृतिक व दर्शनीय स्थल है। यहाँ पर आने वाले पर्यटकों को एक प्राचीन मन्दिर और झरना देखने हेतु मिलती है। यह झरना एवं मन्दिर जंगल के मध्य भाग में बसा है। यहाँ पर आने के पश्चात पर्यटकों का मन आनंदित हो उठता है। इस स्थान पर बरसात के समय चारों ओर हरियाली रहती है। झरने में बहुत जल भरा रहता है। आगुन्तकों द्वारा यहाँ स्नान करने का आनंद उठाया जाता है। गर्मी के दिनों में इस झरने मे पानी कम हो जाता है। पर्यटन की दृष्टिकोण से यह समय व्यतीत करने हेतु उत्तम स्थल है। इस स्थल पर सर्वाधिक भीड़भाड़ नहीं होता है क्योंकि यह मन्दिर व झरना सतना जिले के परसमनियाँ पहाड़ी पर विद्यमान है। पर्यटकों को इस स्थल पर पहुँचने हेतु गाड़ी का सहारा लेना पड़ता है।
- **पन्नी झरना मैहर, सतना** – पन्नी झरना सतना जिले में मैहर के पास स्थित है। यह झरना मैहर से तकरीबन 15 किलोमीटर की दूरी पर विद्यमान है। इस झरने पर पर्यटक वाहन से आवागमन कर सकते हैं और पैदल भी। यह झरना अत्यधिक घने जंगलों के बीच में विद्यमान है। इस झरने तक जाने का रास्ता भी जंगल से होकर जाता है। पन्नी झरना के पास एक प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर पहाड़ों के बीच में गुफा से बना हुआ है। विदित होता है कि इन मन्दिरों मे संत तपस्या किया करते थे। बरसात के समयावधि इन गुफाओं में पानी

रिसता है। पर्यटक इस झरने में जाते हैं तो यहाँ नहाने का आनंद भी उठाते हैं। यह झरना बहुत ही सौन्दर्यपूर्ण है तथा देखने में अत्यन्त ही रमणीय लगता है। बरसात के समय यहाँ की खूबसूरती में चार चांद लग जाते हैं।

- **श्री कर्ममेश्वर नाथ मंदिर, सतना** – कर्ममेश्वर नाथ मन्दिर सतना शहर का एक प्राचीन एवं प्राकृतिक स्थल है। यह मन्दिर शिव भगवान जी को समर्पित है। इस मन्दिर को चौमुख नाथ शिव मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इस स्थल पर आने वाले पर्यटकों को गोमुख देखने हेतु मिलती हैं जिससे वर्ष भर पानी निकलता है। गोमुख से पहाड़ों का शुद्ध पानी आता है। गोमुख का पानी शुद्ध व मीठा है। पर्यटकों द्वारा गोमुख के पानी पीने व नहाने के लिए उपयोग किया जाता है। इस स्थल पर पर्यटकों को प्रकृति का बहुत सुन्दर दृश्य देखने के लिए मिलती है। यहाँ पर एक वॉच टावर भी बना हुआ है, जिससे पर्यटक यहाँ के चारों ओर का सुन्दर दृश्य देखते हैं। यह मन्दिर सतना जिला के नागौद ब्लाक के समीप है।
- **वृहस्पति कुण्ड जलप्रपात सतना** – वृहस्पति कुण्ड झरना सतना शहर में विद्यमान एक प्राकृतिक एवं दर्शनीय स्थल है, यह झरना बरसाती मौसम में जल से लबालब रहता है। यह झरना बहुत ही सुन्दर है तथा चट्टानों से गिरता हुआ पानी देखने में सर्वाधिक आकर्षित लगता है यहाँ पर सबसे अधिक पर्यटक बरसात के समय एवं ठण्ड के समयावधि घूमने के लिए आते हैं। यहाँ पर झरने का पानी एक कुण्ड पर गिरता है। यह झरना सतना शहर से तकरीबन 50 किलोमीटर की दूरी पर विद्यमान है। यह झरना बाघिन नदी पर निर्मित हुआ है। पर्यटन के दृष्टिकोण से यह स्थल काफी महत्व रखता है। यहाँ के सुन्दर नजारे पर्यटकों को अपनी ओर खींचती हैं यहाँ पर आने के बाद पर्यटकों का स्वर्ग की अनुभूति होती है।
- **वृद्धकूटा पर्वत** – यह पर्वत सतना शहर से 65 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह स्थल चारों तरफ से हरा–भरा है और हरे–भरे पहाड़ियों की घाटियाँ प्राकृतिक सुन्दरता पर्यटकों को अत्यन्त ही रमणीय लगता है। पर्यटन की दृष्टि से वृद्धकूटा पर्वत के अलावा यहाँ चार गुफाएँ मौजूद है, जिनमें रॉक पेंटिंग एवं मुराल पेंटिंग दृष्टिगोचर होता है। इस स्थल पर प्रत्येक वर्ष जनवरी माह के बसन्त पंचमी के दिवस विशाल मेला का आयोजन होता है। इसमें मेले लाखों सैलानी सम्मिलित होते हैं। यहाँ की सौन्दर्यता पर्यटकों को बड़ा ही रोचक लगता है। गृद्धकूटा पर्वत पर्यटन की दृष्टि से एक आकर्षित केन्द्र है।
- **धारकुण्डी आश्रम** – सतपुड़ा पठार के विन्ध्यांचल पर्वत में विद्यमान धारकुण्डी आश्रम में प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक का अनुपम मिलन देखने को मिलता है। माना जाता है कि महाभारत में युधिष्ठिर एवं दक्ष का सम्वाद यहीं पर उपलब्ध कुण्ड में किया गया था। यह भू–भाग सतना जिले का मुख्य पर्यटन का आकर्षित स्थल है। हरे–भरे घाटियों वादियों से भरपूर धारकुण्डी सतना जिला का मुख्य पर्यटन स्थल है। इस स्थान पर पहुँचने हेतु रास्ता थोड़ा कठिन है, परंतु यहाँ पहुँचने के पश्चात् प्रकृति का अद्भुत मनोरम दृश्य देखकर पर्यटकों की सारी थकान दूर हो जाती है।
- **पारसमनिया पर्वत एवं झरना** – इस स्थल की प्राकृतिक वातावरण की खूबसूरती पर्यटकों का मन आकर्षित कर लेती है। हरे–भरे वन एवं घाटी का मनोरम दृश्य बहुत ही आकर्षक है जहाँ पर्यटकों को स्थान–स्थान पर झरने व नदियाँ देखने को मिलती है। यह स्थल सतना शहर से तकरीबन 55 किलोमीटर दूर विद्यमान है, जंगली गलियारों के मध्य उपस्थित परसमनिया पर्वत के चोटी के ऊपर से अत्यधिक मनोरम दृश्य परिलक्षित होता है। आगन्तुकों हेतु यह स्थान सबसे उत्तम है, क्योंकि उस समय जंगलों की हरियाली एवं स्थान–स्थान बहता हुआ झरना बहुत ही आकर्षक लगता है।

जल प्रपातों पर आधारित पर्यटन केन्द्र–

जिले से प्रवाहित होने वाली सरितायें प्रपात रेखा का निर्माण करता है जिसके फलस्वरूप यहाँ से बहने वाली नदियाँ पठारी भाग से जैसे ही उत्तर के वृहद प्रदेशों में प्रवेश करती है यहाँ अनुपम सुरम्य जल प्रपातों की रचना करती है। यहाँ की वनस्थली एवं जल प्रपातों के अनुपम सौन्दर्य स्थान–स्थान पर सुशोभित हो रहे हैं। इन सुरम्य प्रपातों की पहचान राज्य व राष्ट्रीय मानचित्रों पर नहीं हो पाई है फिर भी कहीं संख्या में स्थानीय पर्यटक इन प्रपातों का आनंद लेने आते हैं। अधिकांशतः प्रपात वर्षा के दिनों में देखने योग्य होते हैं यहाँ के प्रमुख प्रपातों का विवरण निम्नानुसार है – सतना जिला के जंगली प्रदेशों की अपेक्षा विशेष मनोरम है। यहाँ के वनों एवं जल प्रपातों के अनुपम सौन्दर्य स्थान–स्थान पर सुशोभित हो रहे हैं। इस पवित्र भूमि के कोने–कोने के

प्रकृति की सुषमा किलोल कर रही है। जिले के जलप्रपातों के समक्ष प्रकृति नदी उमंग के साथ नर्तन कर रही है और सतना जिले के गौरव को बढ़ा रही है। प्राकृतिक दृश्यों के दर्शन हेतु देश के कोने–कोने से आने वाले लोग इसकी गोद में आकर नत मस्तक हो जाते हैं। वस्तुतः इस जिले के सुरम्य प्रपातों को देखकर सहसा कविवर जयशंकर प्रसाद जी के मुँह से निकल पड़ा था कि – विन्ध्य भूमि में शांत, गंभीर एवं शक्तिशाली शाश्वत प्रवाहित होने वाले जल प्रपातों का अभाव नहीं है – प्रकृति प्रदत्त अनुकूल परिस्थितियाँ को देखते हुए सतना जिला पूर्वोत्तर स्थल में स्थित एक आदर्श पर्यटक स्थल होना चाहिए था किंतु ऐसा नहीं हो सका जिसके लिए कई कारक उत्तरदायी रहे हैं। यह जिला अपने आंचल में कई पर्यावरणीय भिन्नताओं को समेटे हैं जो दृश्य सौन्दर्य स्थल के रूप में पर्यटन केन्द्रों को जन्म देते हैं। यहाँ के घने वन एवं गगनचुम्बी पर्वतों की उपत्यका में कहीं समतल भूमि है तो कहीं ऊँची नीची टीलेदार धरती, जिनके बीच में बहती हुई टेढ़ी–मेढ़ी सरिताओं के बीच कल–कल करते झरने सहज ही मन को मोहने वाले हैं। इस अपूर्व सौन्दर्य से भरे स्थल पर इस अंचल का आदिम तथा पाश्चात्य जन समुदाय निवास करता है। सतना जिले का भू–भाग शैलानियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। यह अपनी नैसर्गिक छटा, अद्वितीय ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर विभिन्न है, भोजन इत्यादि के लिए छोटे–छोटे होटल है, जिनमें माँग पर भोजन उपलब्ध कराया जाता है।

सतना जिला में विद्यमान इन प्राकृतिक सुन्दरताओं के कारण जो भी पर्यटक यहाँ आते हैं उनका मन रमणीय हो जाता है। यहाँ के वन, नदियाँ, झरने, झील, जलप्रपात इत्यादि प्राकृतिक दृश्यों को देखकर आनंद से विभोर हो जाते हैं। सतना जिले को प्रकृति का वरदान प्राप्त है क्योंकि यह भू–भाग चारों ओर प्राकृतिक सौन्दर्य से सम्पन्न है। जिले के इन मनोरम दृश्यों को देखकर काफी आश्चर्य होता है। यहाँ विद्यमान पर्वतीय पठारें जिनमें हरे–भरे पेड़ों के कारण इसकी सुन्दरता काफी अधिक बढ़ जाती है। यह जिले अनेक पर्यटक स्थलों को उत्पन्न किया है। सतना जिले के इन स्थलों पर वर्ष भर पर्यटकों का आवागमन होता रहता है जिससे जिले को काफी आय की प्राप्ति हो जाती है। जिले के प्राकृतिक आकर्षण को देखकर यहाँ पर आने वाले पर्यटक/आगन्तुकों के मन को अपनी ओर खींच लेता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः सतना जिले के प्राकृतिक पर्यटन स्थल अपने प्राकृतिक सौंदर्य, जैव विविधता और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध हैं। इन स्थलों का विकास और संरक्षण जिले के पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। पर्यटकों की बढ़ती संख्या और बेहतर सुविधाओं के साथ, सतना जिले का प्राकृतिक पर्यटन क्षेत्र भविष्य में और अधिक समृद्ध हो सकता है।

संदर्भ –

1. सिंह, डॉ. सुमन्त (2005–06) – मध्यप्रदेश का पारिस्थितिकी पर्यटन, यू.जी.सी. प्रोजेक्ट
2. नेमी, डॉ. जगमोहन (2010) – पर्यटन मार्केटिंग में विकास, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
3 द्विवेदी, कैलाश (1995) – राय ऋग्वैदिक भूगोल, साहित्य निकेतन, कानपुर
4. पुरोहित, खण्डेवाल (1993) – सांस्कृतिक भूगोल, नूतन प्रकाशन, कोट द्वार, उत्तरप्रदेश
5. भाटिया ए.के. (1978) – टुरिज्म इन इंडिया, हिस्ट्री एण्ड डेवलपमेंट स्ट्रलिंग, नई दिल्ली
6. माथुर सुरेन्द्र (1962) – यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, साहित्य प्रकाशन मालीवाड़ा, दिल्ली
7. अग्रवाल, के. एल. (1992) – "विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल", सरोज प्रकाशन, सतना (म.प्र.).
8. अग्रवाल, रोहित (2019) – "देश का हृदय मध्यप्रदेश पर्यटन", ओम सांई टैक बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली.
9. भाटिया ए.के. (1978) – टुरिज्म इन इंडिया, हिस्ट्री एण्ड डेवलपमेंट स्ट्रलिंग, नई दिल्ली
10. दीक्षित, के.के. एवं गुप्ता, जे.पी. (2003) – "पर्यटक के विविध आयाम", तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली.
11. गौतम, राकेश एवं भदौरिया, जितेन्द्र सिंह (2010) – "मध्यप्रदेश का परिचय", टाटा मैक्ग्रो हिल एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.
12 ग्रेवाल, पी. एस. (1990) – "सांख्यिकीय विश्लेषण की विधियां", स्टरलिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली.